प्रथम अध्याय

शोध आकल्प

1.1 प्रस्तावना

शिक्षा मानव जाति का सबसे महत्वपूर्ण आविष्कार है। मनुष्य शिक्षा के बिना अभी भी एक जानवर की तरह जी रहा होगा। यह एक ऐसी शिक्षा है जिसमें मनुष्य को जानवर से मानव में बदल दिया। शिक्षा शब्द एक हीरे की तरह है जो अलग-अलग कोनों से देखने पर अलग-अलग रंग का प्रतीत होता है। मनुष्य की शिक्षा स्कूल से शुरू नहीं होती। यह जन्म से शुरू होती है। यह तब समाप्त होती है जब वह विश्वविद्यालय से स्नातक नहीं होता बल्कि उसकी मृत्यु पर होती है। अतः शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा शब्द को विभिन्न विचारकों ने विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया है। जहां भारतीय विचार को में शिक्षा की अवधारणा के बारे में आध्यात्मिक स्टिक ऑन अपनाया है। वहीं पश्चिमी विचार को ने व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया है। जॉन डीवी के अनुसार शिक्षा व्यक्ति में उन सभी क्षमताओं का विकास है जो उसे अपने पर्यावरण को नियंत्रित करने और अपनी संभावनाओं को पूरा करने में सक्षम बनाती है। शिक्षा के केंद्र के रूप में ज्ञान वेद शब्द का अर्थ ज्ञान है। ऋग्वेद में शिक्षा को ऐसी चीज के रूप में समझा गया है जो मनुष्य को आत्मनिर्भर और निस्वार्थ बनाती है। उपनिषदों में शिक्षा वह है जिसका अंतिम उत्पाद मोक्ष है।

बच्चे के व्यवहार में संशोधन शिक्षक को मौजूदा सामाजिक परिस्थितियों के संबंध में छात्र के व्यवहार को संशोधित करना चाहिए। दूसरे शब्दों में व्यवहार का संशोधन सामाजिक मूल्यों या स्थितियों की दिशा में होना चाहिए। सामाजिक ताकतें आम तौर पर शिक्षा को प्रभावित करती है क्योंकि शिक्षक और छात्र दोनों ही समाज से संबंधित है और वह इस में रहते हैं। बच्चे के व्यक्तित्व का विकास हमेशा उसके सामाजिक कौशल के अनुसार किया जाएगा जो उसके सामाजिक जीवन को कुशलतापूर्वक और सफलतापूर्वक जीने के लिए आवश्यक है। शिक्षा के उद्देश्यों में से एक राष्ट्र को एक सामाजिक कल्याणकारी राज्य के रूप में विकसित करना है। जहां अमीर और गरीब के बीच ज्यादा अंतर ना हो और हर आदमी की बुनियादी जरूरतें पूरी हो। शिक्षा के प्रमुख विशिष्ट उद्देश्यों में से एक व्यवसाय उद्देश्य है। औद्योगिक और वैज्ञानिक प्रगति के साथ शिक्षा का व्यवसायिक पहलू शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य बन गया है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952) के अनुसार -"प्राप्त ज्ञान बेकार है। यदि कोई व्यक्ति नौकरी पाने में सक्षम नहीं है। " भारतीय शिक्षा आयोग (1960-66) ने सभी शिक्षा के आधार के रूप में कार्य अनुभव की सिफारिश की और विज्ञान और प्रौद्योगिकी उन्मुक्त शिक्षा पर जोर दिया। छात्रों को तकनीकी ज्ञान से अवगत होना चाहिए और इस प्रकार सक्रिय व्यावहारिक होना चाहिए। शिक्षा मनुष्य के साथ-साथ एक मुख्य कुंजी है। आर्थिक विकास और सुधार की जैसे जैसे वैश्विक आर्थिक प्रतिस्पर्धा तेज होती है,शिक्षा प्रतिस्पर्धात्मक लाभों का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन जाती है जो आर्थिक विकास से निकटता से जुड़ी होती है। इसके अलावा शिक्षा आजीवन कमाई के प्रमुख निर्धारकों में से एक प्रतीत होती है। यह मानव विकास

के संकेतक के एक पूरे बैच से भी जुड़ा हुआ है। जैसे-जैसे तकनीकी परिवर्तन की गति तेज होती है और कई देशों में कार्यबल की आयु बढ़ती है। शिक्षा पुराने कार्य बल और इसमें शामिल होने वाले युवाओं के कौशल और क्षमताओं को बेहतर बनाने और अध्ययन करने का एक तरीका प्रदान करती है। इस प्रकार शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। विशेष रूप से शिक्षा के विस्तार के समय।

शिक्षण में आईसीटी का उपयोग शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करता है और गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों में वांछनीय परिवर्तन लाता है। आईसीटी में विश्व स्तर पर समकालीन व्यवसाय और सामाजिक प्रथाओं को प्रभावित किया है। दुनियाभर में अधिकांश शैक्षिक प्रणाली अभी भी पारंपरिक शिक्षण अधिगम प्रथाओं में संलग्न है जिसके लिए शिक्षार्थियों को व्यक्तिगत रूप से काम करने तथ्यों को याद करने या पृथक गतिविधियों को करने की आवश्यकता है। इस प्रकार आईसीटी शिक्षा में सुधार करने और 21वीं सदी की चुनौतियों के लिए छात्रों को तैयार करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, जिससे शिक्षार्थी ज्ञान, अनुसंधान , संचार और दूसरों के साथ सहयोग करने के तरीके को प्रभावित करेगा। इसे आगे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ)2005 में भी महत्व दिया गया था। एनसीएफ 2005 ने 21वीं सदी के शिक्षार्थियों के बीच समस्या समाधान और महत्वपूर्ण सोच कौशल के लिए कक्षाओं में आईसीटी के प्रभावी उपयोग का सुझाव दिया है।

आज भी दुनिया महामारी का सामना कर रही है क्योंकि कोरोना वायरस दुनिया भर में अपना पैर पसार रहा है और इसका असर अभी भी जारी है। महामारी होने कई मौतें लाई है। लाखों लोगों को क्वॉरेंटाइन किया है और इससे वैश्विक स्वास्थ्य आपातकाल की ओर सोचने की गंभीर स्थिति पैदा हो गई है। कोविड-19 महामारी ने दुनिया भर में कुल लॉकडाउन का नेतृत्व किया है और भारत कोई अपवाद नहीं है। लॉक डाउन की अवधि में शिक्षण संस्थान ऑनलाइन और सोशल डिस्टेंसिंग की ओर बढ़ गए थे। लर्निंग को कोविड-19 के दौरान रिबूट किया जाता है। यह कोविड-19 तकनीकी परिचय और इसकी नवीनतम पेशकश को स्वीकार करने का एक आदर्श समय है ताकि छात्रों को शिक्षा वितरण को और अधिक कुशल बनाया जा सके और ऑनलाइन शिक्षण के माध्यम से इसे और अधिक उत्पादक बनाया जा सके। शिक्षण संस्थानों की बंद होने से छात्रों और शिक्षण बिरादरी में कई आशंकाएं पैदा हुई है। हालांकि शिक्षण बिरादरी छात्रों के साथ बातचीत करनी और पाठ्यक्रम पर ध्यान केंद्रित करने के लिए नए तरीके अपना रही है। ऑनलाइन शिक्षण भी सामान्य कक्षा की तुलना में एक दिलचस्प और इंटरएक्टिव अतिरिक्त संसाधन के रूप में आता है। संस्थान और उद्यमी शिक्षक अपने छात्रों के बीच ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा दे रहे हैं, जिसके माध्यम से वंचित वर्ग को कुछ सामानों को छोड़कर सभी छात्रों को लाभांवित करना सुनिश्चित किया जाता है और उन तक नेटवर्क कनेक्शन के कारण नहीं पहुंचा जा सकता। इसीलिए ऑनलाइन शिक्षण अधिगम का नया स्वरूप है। कोविड-19 काल में सीखने सिखाने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने में मदद की है। विश्वविद्यालय और उच्च शिक्षा संस्थानों ने भी कोविड-19 स्थिति में तुरंत आभासी कक्षाएं ऑनलाइन असाइनमेंट सबमिशन और शिक्षक छात्र बातचीत आयोजित करने की ओर रुख किया है।

ऑनलाइन सीखने के लाभ डिजिटल लर्निंग मॉडल एक निर्देश है जो एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म वर्चुअल मीटिंग के माध्यम से होता है जिसे ऑनलाइन लर्निंग कहां जाता है। आजकल छात्रा अपने सामान्य कक्षा

सीखने के पूरक के लिए ऑनलाइन शिक्षण कक्षाएं लेते हैं। शिक्षक और छात्रों के बीच बातचीत चैट के माध्यम से होती है और फीडबैक फॉर्म शिक्षण सिखाने सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने में मदद करता है। यह एक बहुत ही कक्षा सेटिंग्स की अनुपस्थिति पैदा करता है। इस पद्धति में छात्र असाइनमेंट या किसी अन्य सरल परियोजनाओं को जमा करने में रुचि रखते हैं और इकाइयों के अपने योगदान स्तर को बढ़ाते हैं। छात्र अपनी इच्छा और सामग्री में रूचि के अनुसार संदेशों या आवाजों के माध्यम से अपने साथियों के साथ चैट भी करते हैं। शूफा झेंग एट अल (2020) ने शिक्षकों और छात्रों के बीच ऑनलाइन समर्थित संचार तकनीकों की जांच की और ऑनलाइन सीखने का माहौल आमने-सामने के वातावरण से अधिक प्रभावी बनाया है। रूबीन एट अल (2020) ने भी इस अध्ययन का समर्थन किया। सेंथिल कुमार (2012) के अनुसार ऑनलाइन सीखने की प्रक्रिया के लिए फीडबैक सत्र आवश्यक है। डिमफ़ोर्ड और मिलर (2018) बताते है कि छात्रों के प्रतिधारण और ऑनलाइन सीखने के प्रति उनके दृष्टिकोण को बनाए रखना एक महत्वपूर्ण चुनौती है। लेकिन शेफील्ड एट अल (2015) ने सीखने और छात्रों के सकारात्मक दृष्टिकोण का समर्थन किया है और उन्होंने निष्कर्ष निकाला है कि ऑनलाइन सीखने से विषयों की उनकी अवधारणा में सुधार होता है।

ऑनलाइन शिक्षण अधिगम और उसके दृष्टिकोण पर किए गए कुछ शोध कार्य सकारात्मक भी है और यह भविष्य में जारी भी है। -हुआंग एट अल (2017)

1.2 अनुसन्धान कार्य का औचित्य

1.2.1 विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से- प्रस्तुत शोधकार्य विद्यार्थि के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। इस शोधकार्य से विद्यार्थियों अपने सीखने के तरीकों के बारे में समझ सकते है। और अपने व्यक्तित्व का सर्वागीण विकास कर सकते है।

1.2.2 अभिभावकों के दृष्टिकोण से - प्रस्तुत शोधकार्य अभिभावकों के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है इस शोधकार्य के माध्यम से अभिभावक अपने बालकों के जीवन में अकादमिक उपलब्धि पर सीखने के प्रभाव को समझ सकेंगे।

1.2.3 शिक्षकों के दृष्टिकोण से - प्रस्तुत शोधकार्य विद्यार्थियों के साथ-साथ शिक्षकों के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। इस शोधकार्य से शिक्षक विद्यार्थियों को ऑनलाइन सीखने के इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का अपने क्या क्या उपाय है ,जीवन निर्माण के लिये किस तरह प्रयोग करना है? मार्गदर्शन कर सकेंगे।

1.2.4 अनुसंधान के दृष्टिकोण से - प्रस्तुत शोधकार्य अनुसंधान के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। इस शोधकार्य के माध्यम से प्राप्त सुझावों के आधार पर भविष्य में ऑनलाइन सीखने से सम्बन्धित अन्य क्षेत्रों को लेकर नवीन अनुसंधान कार्य कर सकते हैं।

1.3 समस्या कथन

उपरोक्त प्रस्तावना के आधार पर चयनित समस्या का कथन इस प्रकार से वर्णित है:-

"ऑनलाइन शिक्षण अधिगम के प्रति विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं अभिभावकों की राय।"

1.4 शोध अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया जो इस प्रकार से है-

1. शासकीय विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों का ऑनलाइन शिक्षण अधिगम के प्रति राय का अध्ययन करना।

2. शासकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षक शिक्षिकाओं का ऑनलाइन शिक्षण अधिगम के प्रति राय का अध्ययन करना।

3. शासकीय विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिभावकों का ऑनलाइन शिक्षण अधिगम के प्रति राय का अध्ययन करना।

4.अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों का ऑनलाइन शिक्षण अधिगम के प्रति राय का अध्ययन करना।

5.अशासकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षक शिक्षिकाओं का ऑनलाइन शिक्षण अधिगम के प्रति राय का अध्ययन करना ।

6. अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिभावकों का ऑनलाइन शिक्षण अधिगम के प्रति राय का अध्ययन करना।

1.5 शोध अध्ययन का परिसीमन

यह अध्ययन छोटे आकार के नमूने के साथ भोपाल के दो -दो शासकीय और अशासकीय विद्यालय के 40-40 विद्यार्थियों, 10-10 अध्यापकों और 40-40 अभिभावकों तक सीमित रखा गया है।

1.6 परिभाषिक शब्दों की व्याख्या

1.6.1 ऑनलाइन शिक्षण अधिगम- ऑनलाइन शिक्षण अधिगम एक प्रक्रिया है जो इंटरनेट सुविधा के साथ वर्चुअल या सिंक्रोनस मोड के माध्यम से होती है। इसे अक्सर वेब आधारित शिक्षा कहा जाता है।

ऑनलाइन लर्निंग सीखने का एक रूप है जो इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से होता है या बातचीत और संचार के लिए इलेक्ट्रॉनिक तकनीक का उपयोग करता है। यह शिक्षक विद्यार्थी के संपर्क और कक्षा सामग्री के वितरण के लिए इंटरनेट पर निर्भर करता है।

1.6.2 राय या अभिमत - किसी के बारे में किसी के निष्कर्ष के लिए राय, भावना विचार शब्द है। एक राय एक विश्वास या निर्णय जो पूर्ण विश्वास निश्चित्ता या सकारात्मक ज्ञान से कम हो जाता है।

1.6.3 आईसीटी-आईसीटी सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की मदद को संदर्भित करता है। इसकी मदद से शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया मल्टीमीडिया टूल्स यानी छवि ,ऑडियो, वीडियो और आभासी माध्यम से

शिक्षण के तुल्यकालिक मोड का उपयोग करके अधिक इंटरएक्टिव हो जाती है। मल्टीमीडिया के प्रयोग से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया अधिक अंतः क्रियात्मक हो जाती है।

1.7 अनुसंधान प्रतिवेदन की योजना :-

शोधार्थी द्वारा अनुसंधान का प्रतिवेदन को निम्न अध्यायों में विभक्त कर प्रस्तुत किया गया है :-

1.7.1 प्रथम अध्याय शोध आकल्प- यह परिचयात्मक अध्याय है, इसमें शोध आकल्प को प्रस्तुत करते हुए सम्पूर्ण अध्ययन का चित्रण करने का प्रयास किया गया है इस अध्ययन में प्रस्तावना, समस्या कथन, समस्या के उद्देश्य, शोध परिकल्पनाएँ समस्या का औचित्य शोध कार्य में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या समस्या का परिसीमन, न्यादर्श, अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण, अध्ययन में प्रयुक्त शोध विधि, अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी आदि बिन्दुओं का वर्णन जायेगा।

1.7.2 द्वितीय अध्याय सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन - इस अध्याय में सम्बन्धित साहित्य के स्त्रोत भारत में ऑनलाइन शिक्षण अधिगम का विद्यार्थियों के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन सम्मिलित किया जायेगा ।

1.7.3 तृतीय अध्याय - इस अध्याय में प्रविधि, उपकरण व न्यादर्श विधि ,विधि का अर्थ परिभाषा, शोध विधि, सर्वेक्षण विधि, सर्वेक्षण विधि का अर्थ व विशेषता उपकरण न्यादर्श का अर्थ, न्यादर्श की आवश्यकता, न्यादर्श के लाभ, सावधानियाँ एवं चयन की विधियों, न्यादर्श का आकार न्यादर्श चयन के समंकों पर लगाई गई सांख्यिकी प्रविधियों का विस्तार से वर्णन किया जायेगा।

1.7.4 चतुर्थ अध्याय - दत्त संकलन, सारणीयन, विश्लेषण एवं व्याख्या इस अध्याय में दत्तों का संकलन कर सारणीयन किया जायेगा। तत्पश्चात् क्षेत्रवार विश्लेषण एवं व्याख्या की जायेगी।

1.7.5 पंचम अध्याय - इस अध्याय में शोध अध्ययन का सारांश, शोध निष्कर्ष, सुझाव, शैक्षिक निहितार्थ एवं भविष्य में शोध करने हेतु सुझाव का उल्लेख किया जायेगा।

1.8 उपसंहार :-

यह परिचयात्मक अध्याय है इसमें शोध आकल्प को प्रस्तुत करते हुए सम्पूर्ण अध्ययन का चित्रण करने का प्रयास किया गया है इस अध्ययन में प्रस्तावना समस्या कथन, समस्या के उद्देश्य, शोध परिकल्पनाएँ समस्या का औचित्य शोध कार्य में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या समस्या का परिसीमन न्यादर्श, अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण, अध्ययन में प्रयुक्त शोध विधि अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी आदि बिन्दुओं का वर्णन किया गया है।